

राजस्थान साहित्य अकादमी के
आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक श्रीमती सुशीला सघी
शिल्पी प्रकाशन,
सी-177, महावीर मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर
शाखा 53, बापू बाजार
उदयपुर 313001
मूल्य चालीस रुपये

संस्करण प्रथम, 1989
मुद्रक चोपड़ा प्रिंटर्स,
मोहन पार्क,
दिल्ली-110032

EITANE DEENON TAK Poetry by Kundan Mali
Price Rs 40 00

पूज्य काकासा लक्ष्मण जी
के प्रति सादर

ये कविताएँ क्यो ?

कविता के बारे मे प्रचलित विभिन्न परिभाषाओ, व्याख्याओ, मान्यताओ तथा बहस-मुबाहिसो में न उलझते हुए कहा जाना होगा कि कविता का सरोकार विशेष रूप से संवेदना, अनुभूति तथा अभिव्यक्ति से है। यद्यपि साहित्य की अन्य विधाओ के लिये भी यही मानदंड न्यूनाधिक लागू होते हैं किंतु कविता के वास्ते तो अनिवार्यत ।

जीवन का कोई क्षेत्र नही जिसकी परिधि से कविता को परे रखा जा सके। व्यक्ति, समाज तथा देश के वैचारिक धरातल को इसके अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के परिप्रेक्ष्य मे देखने-जाचने, परखने तथा टिप्पणी कर सकने की तर्कसम्मत सक्षमता तथा सर्वाधिक सामर्थ्य किसी सृजनात्मक विधा मे है तो वह कविता मे ही। मानवीय सोच-विचार तथा मंथन के इतिवृत्त म सहज रेखांकित की जा सकने वाली प्रवृत्ति भी यदि देखें तो ज्ञात होगा कि वह कविता ही है। जन-अभिरुचियो का परिष्कार, सुसंस्कारित समाज निर्माण हेतु दिशा निर्देशन तथा व्यक्तिनिष्ठ चिंतन मनन मे व्याप्त विश्रृंखलता को संतुलित, समन्वित तथा श्रृंखलाबद्ध करने का दायित्व भी कविता का ही माना जाना चाहिए।

हमारा समकालीन सामाजिक परिदृश्य मुख्यत परिवर्तनशील, पारंपरिक जीवन मूल्यो से किंचित विचलित, पुरातन तथा अधुनातन मे उलझा तथा भटकावग्रस्त होने का यदि आभास देता है तो इसके अपने कारण हैं। विश्व-समाज में जिन जीवन मूल्यो का प्रवर्तन विश्वयुद्धोत्तर काल मे हुआ उनसे भारतीय जनमानस अधिक समय तक अप्रभावित-अनछुआ रह भी नही सकता था। सामाजिक रुग्णताए, वैषम्य, विसगतिया, व्यग्रता, तंत्रात्मक बुनावट म सुधार की अपेक्षाए मानवीय अस्तित्व तथा सुरक्षा की गारटी, संत्रास तथा वैयक्तिक अलगाव आदि महत्वपूर्ण मुद्दो को समसामयिक कविता की कथावस्तु के रूप मे निरूपित किया जा रहा है जोकि स्वाभाविक भी है और अपरिहार्य भी।

कविता यदि जड़ता का तोड़ती है, आदमी को भविष्य के प्रति आश्वस्ति प्रदान करती है तथा उसके विवेकोचित दायरे को विस्तृत कर सकने वाला बिम्ब बनकर परिलक्षित होती है तभी वह साधक कही जानी चाहिए। यह अपेक्षा निष्फल नही होगी कि प्रस्तुत सकलन की कविताओ को उपरोक्त निर्धारक कारको के प्रकाश मे ही देखने का प्रयास सुधी पाठक करेंगे।

श्रद्धेय डॉ० पूनम दईया एव श्री भगवती लाल व्यास (गुरु जी) के निरतर मार्ग दर्शन, सुझावो तथा अटूट विश्वास का ही प्रतिफल है यह काव्य सकलन। आप दोनों के सानिध्य के अभाव मे उक्त सग्रह का आ पाना नितान्त दुष्कर था। नमन।

समस्त परिजनो के प्रति गहन कृतज्ञता ज्ञापन करना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है जिनके सतत् स्नेह सवधन तथा आस्था के रहते ही सवसभव हुआ। समाज के प्रति आभार प्रकट नही करना कृतघ्नता की पराकाष्ठा होगी। इससे मिलन वाली आत्मीयता से मैं सर्दव अभिभूत रहा हूं।

प्रत्यक्ष प्रच्छन्न प्रेरणा प्रोत्साहन के निमित्त अनन्य मित्रों डॉ० ए०एल० पचोली, डॉ० मधुसूदन त्रिवेदी, डॉ० शम्भू गुप्त, सवश्री जगदीश भाटी, श्री निवासन् अय्यर, मागी लाल नागदा, माधोसिंह इन्दा, शकर नागदा, भागव दव चटर्जी एव सर्वोपरि भगवती बच्छावत, गौरीशकर तवर एव लोकेश गोस्वामी तथा आदरणीय वी० एन० शर्मा साहब के प्रति विनम्र आभार।

राजस्थान साहित्य अकादमी की पांडुलिपि प्रकाशन सहयोग योजना के अन्तगत प्रस्तुत सकलन को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के निमित्त अकादमी, अध्यक्ष डॉ० प्रकाश आतुर तथा सचिव डा० लक्ष्मीनारायण नन्दवाना का धन्यवाद।

अन्त में, पुस्तक के स्तरीय प्रकाशन के वास्ते *शिल्पी प्रकाशन* जयपुर-उदयपुर के सचालक भाई श्री विजेन्द्र कुमार सघी साधुवाद के पात्र हैं।

2 जनवरी, 1989 —कुन्दन माली
170 टेकरी, उदयपुर 313001

क्रम

आग

आप, मैं, हम सब
जलता हुआ
एक किस्सा हैं
उसी आग का
हिस्सा हैं

आग
मेरठ की या सभल की
जलगाव या भिवडी की
इन्दौर या थाणे की
आग
आग है
उजडता हुआ
सुहाग है
प्रलय-गुहा से
हरपल निकलता
झाग है

आपके, हमारे
न जानने से
क्या फर्क पडता है ?
अपने होने का मतलब
खूब जानती है
आग !

संघर्ष

अश्वत्थामा !
जीवन के
इस कुरुक्षेत्र में
अस्तित्व के
महाभारत में
धोखा खाओगे
तुम
एक बार फिर
मारे जाओगे ।

लड़ाई के हथियार
तुमने
गलत चुन लिये हैं
शब्दों के
निरे प्रलाप
तर्कों के
कवच
या
आत्मा-मुग्धता की
सेना के सहारे
कब तक
काम चलाओगे

सहस्त्रविध
रण-कुशल योद्धाओं से
स्वय को
बचा पाओगे ??

आदमी, बादल और समुद्र

समुद्र
झूमती, बलखाती
असंख्य
तटोन्मुख लहरें हैं

बादल
पानी की बूंदों से भरे
कांपते-हांफते
भयातुर चेहरे हैं

आदमी
बादल या समुद्र
दोनों ही
या फिर
कुछ भी नहीं ?

चौकसी

इन दिनों
हम सब
निज-हितों की
देखभाल, सुरक्षा
सार-सभाल
घरवाली मानिंद
कर रहे हैं

वैसे भी
चिरतन सत्य है
आदमजात को
जन्म से ही
सर्वाधिक प्रिय हैं
अपना स्वार्थ
दूसरे की घरवाली ।

इतने दिनो तक

इतने दिनो तक
साप
जो गौरैया के
बच्चो पर
हाथ
साफ करता
आ रहा था

चौकन्ना
दिखाई देता है

वजह
कौन जाने
गौरैया के
बदलते हुए
तेवर ही हो !

सभावना

बच्चा
अतीत का
मोहक स्पदन
शापित
वर्तमान की
हलचल
भविष्य-भागीरथ की
गोद मे मचलता
गगाजल।

शब्द

शब्द
महज नहीं है
शब्द

शब्द सयोग है
शब्द वियोग है

शब्द से हम स्तब्ध हैं
शब्द हमारा प्रारब्ध है

शब्द कौरवो का
भ्रातृ द्रोह
अभिमन्यु का
व्यामोह

शब्द
अर्जुन का सशय
कृष्ण की
गीता का आशय

शब्द
द्रोपदी की लाज का सवेग
दुर्योधन के मतव्य का
मनोवेग है

अब
शब्द को चाहे
तलवार बने या
कुल्हाड़ा
क्या इतना काफी नहीं
शब्द का बखूबी इस्तेमाल
जानता है आदमी ?

सृजक और सृजन

ईश्वर
स्वय
कुछ भी नही देखता है
कुछ भी नही सोचता है
कुछ भी नही बोलता है
और वह
अलमस्त
चाक-चौबस्त
तदुरुत है

आदमी
स्वय
सब कुछ देखता है
सब कुछ सोचता है
सब कुछ बोलता है
और वह
हौसलापस्त
रग बदरग
अस्त-व्यस्त है

यात्रा

पावों पावों
खड़ी ज़िन्दगी
कापे कापे
पड़ी ज़िन्दगी

अपनों से भी
सपनों से भी
क्षण-प्रतिक्षण से
लड़ी ज़िन्दगी

चिन्दी चिन्दी
उड़ी ज़िन्दगी

किस से पूछें
कौन बताये
मौत बड़ी
या
बड़ी ज़िन्दगी ?

उम्मीद

मा बाप
इन दिनो
काफी हद तक
सतुष्ट हैं

बच्चे/चलो
कुछ तो सयाने हुए
ठीक उनकी तरह
वे
हाथ अब भी
खडे करते हैं
लेकिन
मुक्का ताने हुए

प्रतिद्वद्विता

जिदगी
कभी-कभी
जाली चेक-सो लगती है।
जिसे समय ने हथिया कर
कब्जे मे कर लिया है
और तमाम जमा-निधि मे से
दु खो को वैसा ही छोड कर
सुखो को झोली मे
भर लिया है

शिकायत
इसके जाली चेक होने से नही
खाते मे शेष-नि शेष से भी नही

शिकायत
केवल जिदगी और समय की
छीना झपटी को लेकर है
जिसने कर दिया
हर तरफ से जीना
दुश्वार
खामियाजा
भुगतना पडता है
आदमी को हर बार।

परपरा प्रतिनिधि

सतही लगता है
यह कहना कि
लोग सनातन परपरा मूल्यो से
दूर, विश्रृखल हो
विचर रहे हैं
या
एक दूजे का
गला चाक करके
अपना घर
भर रहे हैं

आपका आरोप ?
निहायत बोदा है/कि
हर कोई स्वार्थों का
फलता फूलता पौधा है

दरअसल
प्राकृतिक-अप्राकृतिक
मौत मरना
मानव जीवन की
अनिवाय शत और
नियतिबद्ध सौदा है

आज भी
हम
संस्कृति के मूलमंत्र
'सत्य वद धर्मंचर' का
अक्षरश: पालन कर रहे हैं
यह बात दीगर ठहरी
सत्य का वध करके
धर्म को चर रहे हैं।

प्रगति के पथ पर

अगली सदी की
देहरी पर पहुचे देश की
आगे के लिए
पक्की तैयारी है

प्रगति की सारी शर्तें
पूरी करता है देश
सभी साज़ो सामान
मौजूद हैं

सब कुछ पहले से
मौजूद हैं यहा
औरो के सामन
हाथ फलाने की नौबत
पहले भी नही आई
अब भी नही/आने वाली

दो

सब कुछ मौजूद है
अति उत्साह की/सीमा तक
हाथे बाधे खडे
लालायित देश मे

खिलाने को घूस
जलाने को बहुए
कत्ल करने को मान्यताएँ
नफरत के लिये नेकी
प्रेम करने को पैसा

दायित्व-पूर्ति के लिए
वोट का हक
झपटने को
दूसरे की रोटी
छिपाने को मुह
जैसा अपना देश
देश न कोई वैसा

तीन

सब कछ तो
मौजूद है यहा
इससे सतुष्ट होना
आपकी जिम्मेदारी है
देश की नही

या तो/आप ही
अपनी अपेक्षाए
कम करें
अन्यथा
देश को साफ करें।

इंसान

आदमी से
हर्गिज
बड़ा नहीं हो सकता
भगवान

एक
भाग्य विधाता है
दूसरा भाग्यवान।

लोग भूले नहीं हैं

लोग
भूले नहीं हैं
अपना राग
अलापना

पराये माल की
आग तापना
इस-उस बहाने
औरों में
झांकना

इधर-उधर
उंगली उठा
अपनी ग़लती
ढांपना
ऐन
वक्त पर
मैदान छोड़
भागना

भूल जाने वाला
चाहे जो हो
आदमी
नहीं ही होगा।

चिड़िया

चिड़िया
अकेली हो तब भी
चिड़िया
झुंड मे तो तब भी

चिड़िया
एक साथ हसती है
एक साथ गाती है

अकेली या
एक साथ हसती है
एक साथ रिझाती है
चिड़िया
एक या
अनेक

दो

अपने या गैरो के
नन्हें-मुन्नो को
एक साथ खिलाती है
एक साथ बहलाती है

चिड़िया का
स्वभाव ही
कुछ ऐसा बन गया है
हानि-लाभ/अच्छा-बुरा
रोना-धोना नहीं
जानती चिड़िया
तब भी
स्वयं को कुछ भी
नहीं मानती चिड़िया

आदमी की
सामाजिक-प्रतिबद्धता का
मुकाबला भला
क्या खाकर
कर पायेगी चिड़िया ?

तब और अब

कबूतर
अब
क्रूरता का
सन्देशवाहक है

तोता
वह भी तो
इन दिनों
रामनाम की बजाये
नफरत के
नारे उगलता है

आदमी
तपती रेत में
जैसे पावों के निशान
वैसे ही
इसमें मौजूद
इन्सानियत की
पहचान।

हवा और तिनके

स्नेह-सम्बन्ध
हल्के-फुलके तिनके
मद हवा मे
उडते फिरते

यही
अहम् के
चक्रवात मे
धूल-धूसरित हो
औंधे मुह को
नीचे गिरते।

पढा-लिखा

जमाना
कदम कदम पर
तरक्की के नमूने
देख-दिखा रहा है

मा-बाप ने
जिस बेटे को
पेट काट कर
पढा-लिखाया

वही सपूत
बाबू बनकर
पितामह सरीखे
बुजुर्ग को
राशन कार्ड मे
नया नाम
लिखाने के वास्ते
घर के मुखिया के
कथित जाली अगूठा
लगाने पर
कोट कचहरी के
कायदे कानून
सिखा रहा है।

समुद्र-मथन

बतौर
योग्य उत्तराधिकारी
अपने सिर पर
समुद्र-मथन की
महती जिम्मेदारी है

तब
मूल प्रश्न
अनसुलझा मसला
अमृत

अब
आपके-हमारे
वर्तमान-भविष्य के
स्वार्थों की बारी है।

गिरावट

प्रयत्न करने पर
जीवन मेरु पर
चढ सकता है आदमी

उत्तम मध्यम-अधम मे
फर्क न पाये जाने पर
सुमुख पक्षी की भांति
वहा से
दोबारा
उड भी सकता है आदमी

क्या होता है
जब
खुद की नजर मे
चढकर भी
दूसरो की नजर से
गिरता है आदमी ?

अभाव

गोकुल वासियों के
दुर्दिन
ढल सकते हैं

इन्द्र-शाप की
परिधि से भी
वे
निकल सकते हैं

उनके
सुनहरे स्वप्न
पांवों पर
चल सकते हैं

गोकुल है
गोवर्धन भी है
केवल
कृष्ण नहीं है !

इन दिनो

स्वतन्त्रता के चलते
हमसे कोई भी
कभी भी/कुछ भी
करवा ले

निर्दोष को
सप्रमाण अदर
दुष्ट का
हार्दिक समादर
सज्जन की छीछालेदर

इस
स्वतन्त्रता के चलते
स्वतन्त्रता की बाबत
दो शब्द
कहना चाहेगे आप ?

सत्य का तथ्य

वरुण द्वारा
अपहरण कर लेने के
बावजूद
तप और पराक्रम के
बल पर
सोमा को पुन
पाने वाला
एक हुआ उतथ्य

अब
यह चरितार्थ
नही होता
जहा तक
सम्बन्धित है
हमारे द्वारा
निस दिन अगवा
किया जाने वाला
सत्य।

शर्त

इन्द्र होने की
शर्त
जरूरी नहीं
आदमी के लिये

समय के ऐरावत पर
चढ़ कर
सफलता के
स्वर्गद्वार तक
जाया जा सकता है

शर्त
घुड़सवारी में
पारंगत होने के
अलावा
क्या हो सकती है ?

फिलहाल

स्वय को
झूठ के तईं रोकना
सच के लिए झोंकना
जैसे
साक्षात्
पहाड़ को तोकना।

सृष्टि या सहार

पत्तो की
अपनी कहानी है
अपनी जवानी है
पत्ते
सूखे हो
चाहे हरे
ऊर्जाहीन या
विपुल सभावना भरे
पत्ते होते ही हैं पत्ते
पत्तो के अलावा
वे
कुछ और नही होते

पडो प लदे फदे
हरे पत्ते
पेडो से गिरते
सूखे पत्ते
चाहें तो
भर सकते हैं
हर एक का पेट
या कर सकते हैं
जलाकर

सब कुछ राख
निर्भर करता है
इनसे काम लेने वाले की
कुशलता पर।

ताकि जिंदगी जारी रहे

लोग
अब भी दमखम से
सवरते-सजते हैं
वनस्पति घी के
खाली टीन की तरह गाते
नीरो की बासुरी जैसे
बजते हैं

जल-विहीन मेघो से
गरजते हैं
तमाम नाइन्साफियो के सामने
शराबी की
लडखडाती जबान मे
लरजते हैं

रीढ टूटे साप की भाति
जीते रहने की आस मे
घिसटते हैं
अपनी ही
लक्ष्मण-रेखाओ के भीतर
लगातार
सिमटते हैं
इस

शहर के लोगों ने
आदमी होने का भ्रम
काफी पहले ही
तोड़ दिया है
जैसे किसी ने
मछली को समन्दर से
निकाल कर
तड़पने को तपती हुई
खुली रेत पर
छोड़ दिया है।

सह-अस्तित्व

निष्ठुरता के
अश्वमेध का घोड़ा
इक्कीसवीं सदी में
मजे से रहने
लायक
हो गया है

संकीर्णता की
घास
खा भी रहा है
उसी से यारी
निभा भी रहा है।

बिगुल

ब्रह्म-विधान के
खिलाफ
खड़ा होने वाला
हरेक
आखिर असुर
नहीं होता

परमेश्वर-पुत्र ईसा
आदम-हव्वा के
खिलाफ
लड़ने वाला
हरदम
शैतान
नहीं होता

स्वर्ग निकाले
असुर या शैतान होने से
महत्वपूर्ण है
किसी न-किसी के
खिलाफ
खड़ा होना।

अटूट-रिश्ता

मालिक
आपके रहते हमे
भला क्या गम
आपके बेहद
शुक्रगुजार हैं हम

हम
आपके साज
आप साजिंदा हैं
साज बने बजते हुए
आपके हाथो मे सजते हुए
आपकी ही बदौलत
तो जिंदा हैं

वे/जो
लगातार बजते साज हैं
उन्ही का कल था
उनका कल भी होगा
उनका ही आज है

आपने
ईश्वर की खामी मे
सुधार किया/तो
अच्छा ही किया

बेमकसद भीड-तन्त्र को
मुफीद किस्म के
साज़ बना दिया
मालिक
आप शायद जानते होगे
साज़ो-बाज़ो/और
तख्त ताजो मे
कायम रहा है
अटूट रिश्ता।

देश-दशा

अब भी
हैं कुछ लोग
जो देश को
भूने चनों की पुड़िया जसे
चबा जाने को
आतुर हैं

हैं कुछ लोग
जो देश को
किसी शातिर बनिये के
सौदे-सुलफ की भांति
सुलटा लेना
चाहते हैं

हैं कुछ लोग
जो देश को
किसी चंचल किन्तु
अल्हड़-अनजान
षोड्शी की भांति
उसके चिंतातुर पिता की
नजरें बचाकर
उठा लेना चाहते हैं

हैं कुछ लोग
जो देश को
मंदिर से ग्रहण
किये जाने वाले
चरणामृत-सदृश
श्रद्धावनत होकर
गटक लेना चाहते हैं

पर
देश को कुछ भी
स्वीकार्य नहीं
देश बने रहने के सिवाय !

कुर्सी

कुर्सी
अपने पर
बैठने वाले से
बेहतर है
बल्कि बहुत बेहतर

इन्सान और कुर्सी
कुर्सी और इन्सान
आदमियाती नहीं कुर्सी
कुर्सियाता है इन्सान

कुर्सी की कोई
जात नहीं
कुर्सी की कोई
पात नहीं
कुर्सी के सामने
इन्सान की
बिसात नहीं
बौराता है
कुर्सीनशीन इन्सान
और डोलता है
तब भी
उसका ही ईमान

स्वय मे
स्थिर है कुर्सी
निर्विकार है
उसका ईमान

कुर्सी के स्वभाव मे
किसी भी हलचल के लिये
जिम्मेदार है
इन्सान ।

भूख चार काव्य बिंब

एक

भूख का कोई दर्शन
या भूगोल
होरी को पता नही
इस मामले मे
जाने तो
तू ही कुछ बोल

दो

किस्मत ने लिखी
भूख की कहानी
लेकर आसू की स्याही
काम मे
अब मौत चाहे
भूख से हो या
कुपोषण से
क्या रखा है नाम मे ?

तीन

हाकिम हुक्मरान
कौम की सेहत और

गिरती माली हालत की खातिर
विदेशी कर्ज़ा लेकर भी
करते हैं मुल्क की
हौसला अफज़ाई
हम सिर्फ रोटी और भूख भूख
चिल्ला कर करते हैं
खुद की जगहसाई

चार

अपने राष्ट्र-धर्म
चरित्र-आत्मबल के सहारे
दुनिया को हम
आज भी
ठेंगा दिखा रहे हैं
मात्र भूख के ज़रिये
मृत्यु का वरण करके
आत्मा को
स्वर्ग में स्थान
दिला रहे हैं।

सवाल और सिद्धांत

समाजवाद और साम्यवाद
गांधीवाद और पूंजीवाद के सवाल
रामलुभाया के पीछे नहीं भागते
फकत रोटी का सवाल ही
उसे हफा देने को
काफी है

यथार्थ, मार्क्स और जनवाद जैसे
मुहावरों के सैद्धांतिक जंगल में
कभी नहीं भटका
उसका खानदान

जानता है वह
इस अरण्य से कोसों
दूर रहने पर भी
उसके पूर्वजों को
अकारण उठाना पड़ा
दु:खों का पहाड़

बाल्यकाल में ही
(अकारण नहीं)
काल कवलित हो गया
उसका छोटा भाई

पीलिया की वजह से
स्वर्गवासी हो गई
उसकी प्यारी मा
जैसाकि
सरकारी रपट मे
दर्ज है
असली कारण हालाकि
रामलुभाया को
पता है अच्छी तरह

एक सवाल लगातार
उसके कानो मे
गूजता है बार-बार

पीलिया या तपेदिक
हैजा या मोतीझरा
क्या बपौती है
सिर्फ गरीबो की ?
भरपेट खाये लोगो से
इनका भी सरोकार
होना चाहिये आखिरकार ??
बाकी सवालो-सिद्धातो की उसको
नही जरा भी दरकार ।

राम पदारथ के बहाने चार कविताए

एक

रामपदारथ के गाव मे
पार साल जैसा
इस बार पड़ा
फिर भयकर सूखा
तब भी
तकाबी तो उसे
भरनी ही है
रहना पड़े चाहे
परिवार को भूखा

दो

जब से रामपदारथ के
खेत-खलिहान
मकान और
ढाण
दुकान हो गये,
तब से ही
उसके सपने
लहू-लुहान हो गये

तीन

रामपदारथ ने
अपनी जिंदगी
किसी तरह
रोते पडते
काट ली
दु ख दद बाटते-बाटते
लोगो ने उसकी
जमीन ही
बाट ली

चार

रोज़ की भाति
नीद से जागने पर
रामपदारथ ने
उनीदी आखो देखा
उम्र के इस पडाव पर
सरकार की निगाहो मे
पार कर ली है
उसे जैसे कई लोगो ने
गरीबी की
सीमा-रेखा।

रात चार व्यक्ति चित्र

एक

विषम समस्याओं की
अनबूझ पहेली सी
लगती है रात
या दु:खों के बचपन की
सहेली सी
लगती है रात
और कुछ हो ना हो
इसी बहाने
पता तो चल ही जानी है
उसकी जात-जमात

दो

विपन्न को
मुसीबतों की छड़ी से
बहेलिये जैसे
सहलाती सी
दिखती है रात
सपन्न को
पैसों के झुनझुने से

-स्नेहमयी धाय जैसे
बहलाती सी
-दिखती है रात
यह रात और
उसकी बात

तीन

आदमी, आराम और रात
नींद, रोटी और प्रभात
सबमें जुड़ी है
अविच्छिन्नता की बात
कुछ लोगों की
वंशानुगत शत्रुता
चलती है फिर भी
नींद के साथ
कुछ भूखे पेट
सो जाते हैं इस आस में
खा पायेंगे वे
कम से कम
सवेरे का तो भात।

चार

कुछ लोगों को
रोजमर्रा के झमेलों से दूर
नींद में गाफिल
कर देती है रात
कुछ को/हमेशा की तरह
मालो-असबाब में मगन
सुख-सुविधा से लबरेज
गले तर/भर देती है रात

रात के इसी भांति
होने और न होने मे
किसी के पाने और खोने मे
छिपा है एक के लिये
जीवन का अर्थ
दूसरो के लिए अनर्थ ।

फैसला आपके हाथ

राजा
भूखा क्यो रहे ?
उसे अपच की
शिकायत रहती है

राजा
प्यासा क्यो रहे ?
उसके महलो मे
सोमरस की
नदी बहती है

राजा
बीमार क्यो पडे ?
एवज मे रोग तो
प्रजा सहती है

राजा
क्यो चीखे चिल्लाये ?
राजा
क्यो उबले-झल्लाये ?
प्रजा
सब कुछ तो
चीखने चिल्लाने

उबलने-झल्लाने
वाले अंदाज में
कहती है

इसीलिए तो
राजा
तब भी राजा था
राजा
अब भी राजा है

इसीलिए तो
प्रजा
तब भी प्रजा थी
प्रजा
अब भी प्रजा है

राजा जी
उमर के सौ बरस
पूरे करें
प्रजा रहे या
अभी मरे
लायक-नालायक
पात्र और कुपात्र का
फैसला भी फिर
प्रजा ही
क्यों न करे?

नवरगी लाल की रामकहानी

नवरगी लाल जैसे लोगो के
पैदा होने/ना होने से
नही पडता देश को/आधारभूत फर्क
ये फिर भी पैदा हो जाते हैं
समाज, सस्कृति और मुल्क की तो
खैर छोडिये
इनके घरवाले भी ताउम्र
इनसे प्रभावित नही हो पाते हैं

तब भी अवाछित मामलो से
निपटना तो व्यवस्था को ही पडता है
वरना/बाकी समाज सडता है

व्यवस्था ?
तो त्रिलोकी नाथ जैसे कुशल-सक्षम
प्रबुद्धजनो के सहारे
सबल-स्वस्थ जिंदा है
अन्यथा पता ही क्या चले
कौन हाकिम कौन बाशिंदा है

नवरगी का अपने वर्ग समेत
खाने-पीने, ओढने पहनने का भी
क्या है आखिर मायना ?

व्यवस्थानिष्ठ लोगो का
खाना-पीना, पहनना
ओढना विछाना
सौ फीसदी ताज़ा दम अवाम का
मुह बोलता आईना

नवरगी और व धुवा धवो का
सुनना बोलना भी क्या ?
महज गीली लकडी का
सुलगना बुझना
असल चीज है व्यवस्थानिष्ठ
लोगो की चर्चा परिचर्चा
गोकि मुल्क से मुखातिव
हगामी हालात/मुख्तलिफ
मसाईल से जूझना
नवरगी भाई जैसो से
मतलब-बेमतलब सलाह करने की
किसी को क्या-क्यो पडी ?
उधर देखिए
त्रिलोकी सदृश/शालीन-सभ्य सुसस्कृत
अहलकारो के दर पर
मुह अधेरे ही/दो चार होने को
शाश्वत समस्याओ की
फौज खडी है

नवरगी या
उसकी विरादरी के
खुश होने/न होने से
अशाति का ज्वालामुखी नही फूटता है
नाही व्यतिक्रम का आसमा टूटता है

प्रसन्नवदन, प्रफुल्लित शासन तत्र से
मिलने का/जब भी किसी को

मौका पडा है/खुद-ब-खुद
समझ जाती है दुनिया
हिन्दुस्तान अपने पैरो पर
मजबूती से खडा है

नवरगीलालो के
शोकाकुल होने पर/तनिक भी ध्यान
न लगायें आप/इनका तो अस्तित्व ही रहा
जन्मजात अभिशाप
इतमीनान को चाहे तो/परपरा से
पुष्टि कर लें माई बाप

उधर
देश, धर्म/समाज-सस्कृति के ठेकेदारो पर
जब-जब विषाद की
मूर्च्छा पडी है/शर्तिया समझ जाइए
देश पर बहुविध/सकट की घडी है

व्यवस्था मे अलबत्ता/अब भी
मूल्यहीनता, चारित्रिक-पतन
सर्वत्र विनाश-विषमता
इन सबसे दो दो हाथ करने का
लगातार पैदा होते
शून्य को भरने का
अटूट जीवट है

हालात यद्यपि
अत्यत विकट हैं/फिर भी
गेहू की फसल में
बथुए की खरपतवार-से
पलते-बढते-लुढकते

रेंगते और मरते
नवरंगियो की
पैदावार रुक जाये
तो बस ! !
फिर काहे का सकट है ? ? ?

मर्ज़ लाईलाज

दुनिया के हर गाव
गली मोहल्ले मे रहने वाली
औरत आई मेरे पास
जर्जरित शरीर
रोग-मुक्ति की लेकर
मन मे आस

बात तारूफ पर
अटक गई
उसकी सूरत
रजो-मलाल से
लटक गई

"नाचीज़ का नाम
इसानियत है
आपके जानने को
इतना ही काफी है।"

मैंने नजदीकी और
गौर से देखा
जवाब मे खिंच गई
उसके ललाट पर
पीत-स्मित विस्तृत रेखा

चीमारियों का वह
अजायबघर देख
मैं चौंका
उनके प्रकार सुनकर
हैरान
रह जायेंगे माई-बाप
खुशी के लिये फिर भी
गिनिये जनाब

संवेदनहीनता का
उच्च रक्तचाप
स्वार्थ-पाखंड के
जीवाणुओं की मारी
असहाय अबला बेचारी

वो भी अब
लालच के क्षय
दिग्भ्रम के भय
कुंठा के हैजे
सबसे खुद को
कैसे और
कब तलक सहेजे ?

चूंकि काल-वेग
रोग रफ्तार
त्वरित है
आखिर इसका
होगा क्या ?
यह यक्ष प्रश्न
हमेशा की तरह
आज भी अनुत्तरित है ।

समर्पण

देखते-देखते
हम
कितने बड़े हो गये

बेईमानी का अहाता
मतलब की चारपाई
स्वार्थ-सम्बन्धों की
दरी-चादर
ओढ़-बिछाकर
सोये पड़े मुद्दत से

फायदे की शहनाई
कपट की राग-भैरवी का
समवेत स्वर सुनकर
नींद से जाग
हठात्
खड़े हो गये

समेट बैठे
दरी-चादर
साफ किया
अहाता
फकत इसलिए कि

अभी
काफी जीना है
जानते हैं आप
जीने जितना ही
जरूरी है सोना

स्वय को
अर्पित किया
कल के वास्ते
फिर खुद के लिये
क्या पाना-खोना

बस
खूबसूरत चारपाई पर
नित नई चादर
बिछाते रहे
सुनहरे स्वप्न की आस मे
खुद को रिझाते रहें।

कब तक ?

गाव मे
रमचन्ना के घर-आगन मे
अमन-चैन है
कुए मे भरपूर पानी
खेतो मे झूमती फसल
खासा
दूध देती गाय-भैंसें
जगल मे निश्चिन्त चरती
भेड-बकरिया

रोज़ सवेरे
स्कूल जाती
छोटी बहन
मक्खन निकालती मा

शाम को
चौपाल मे
हुक्का गुडगुडाता
गाव के
दु ख-दद सहेजता
उसका बाप है
गाव की
खुशहाली के लिये

मंदिर में बजते
शंख-घड़ियाल हैं
जीवन की जोवट
बाकी चाल है

लेकिन
यह सब क्या
तब तक नहीं

जब
महाजन
तहसील के कारिंदे
बहन की ससुराल वाले
हिसाब चुका नहीं देते
रिश्तेदारी जता नहीं देते
टंगड़ी मार कर
रामचन्ना को
जीवन-दौड़ में
गिरा नहीं देते ?

विवशता

अन्धी गलिया
अनजान रास्ते
अपने से ही
बेखबर लोग
अजनबी शहर
दोनो की रगो मे
अर्बी घोडो जैसा
सरपट दौडता जहर

शहर की
यह जलवायु
जिस किसी को
रास नही आती
वे सब कुछ
चुपचाप
लगातार सह रहे हैं

जिसको/किसी से
कुछ भी
शिकायत नही
रास्तो से, गलियो से
शहर से या मौसम से
उनको कुछ भी

बोलना नहीं होता
वे निश्चित सो
अपनी अपनी
कर और कह रहे हैं

मौसम की तकलीफें
शहर के कष्ट
महसूस करने मे
या सहने मे
बोलने मे
या कहने मे
तटस्थ रहने या
धारा के साथ-साथ
बहने मे

प्रत्येक के मध्य है
अनत-अथाह
दूरी
जिसे
पाट नही पाना ही है
सबसे बडी
मजबूरी है ।

नादिर, तुम जिंदा हो

इतिहास चाहे
लाख साबित करे हुए थे कभी तुम
ढाया था कहर
बरसाया जहर
लिखे खूरेज अफसाने
हम यह मानने को बिल्कुल
तैयार नही कि
हम मर चुके

कहा तो यहा तक
जायेगा कि
बन गये तुम एक मुसलसल
रवायत/जीवन्त परपरा
जिसका जी खून से
कभी नही भरा

यह सच नही
तो बोलो ?
खेमो मे बाट/लडाने वालो से
तुम्हारा नाता नही ?
रोटी ? बेटी ? या खून का ही सही ?

क्या कुछ भी नही लगते
वे

बहा रहे जो एक दशक से
अपनो का ही खून
और
यह महज़ जुनून
कि इससे बचेगा मजहब
बढेगा ईमान
और ज्यादा पाक-साफ
तुम मानो न मानो
हैं तुम्हारे ही काबिल जानशीन
जानते हैं/इस रिश्तेदारी पर
नही खुलेगी तुम्हारी ज़बान

अलग-अलग इलाकाई
झन्डे लहराते हुए
आखो मे लाल डोरे उगाये
सिपहसालार क्या नही सीखे
तुमसे लडाई का इल्म
खैर तुम क्या बोलोगे ?

अपनी हुनरमदी-फन/उस्तादपन का
शायद तुम्हे भी
नही रहा होगा इमकान
तवारीख भी रही तुम्हारी
इस खूबी से अनजान
तुम्हारे शागिद/बिला नागा
चमकाते उस्ताद की शख्सियत
अब तो तुम भी मानोगे
तुम कभी नही मरे
कहा भी है/गुरु अपने फन मे रहता है
हमे शाजिदा/कोई परपरा/रवायत
वैसे भी मरा नही करती/तब तो
बिल्कुल नही/गर
इससे जुडी हो

खून की हवस/दौलत की भूख
शोहरत की बीमारी
हुकूमत की अमलदारी

अगर
कुछ भरा भी है तो
फकत तवारीख
जिसने खुद के भोलेपन मे
तुम्हे भुला दिया
तुम्हारे जैसे
जाबाज
इतिहास की बदौलत या
तज पर
नही चला करते हैं

नादिर और
उसके अ शज-वशजो के
कारनामो के बल पर
इतिहास
-खुद ही ढला करते हैं !

प्रतीक्षा

कमल के पत्तो पर
ठहर कर फिसलती
पानी की बूदो की मानिंद
जब झर गई
हमारी इसानियत

तब
कक्रीट के
इस जगल मे
जहा पग-पग
घूमते हैं
स्वार्थ के बघेरे
रोशनी के लुटेरे खुशबू के
स्वयभू चितेरे।

पुराने दस्तूर के तहत
जहा मजिल मिलते ही
तोड दी जाती है
हर एक सीढी

इन सुनसान
वीरान पगडडियो पर
इस देश की

नौजवान लेकिन
गुमराह पीढ़ी
उदित होने वाले
कौन से सूरज की
किरणों को टोह रही है ?
वह
शायद
आगामी परिवर्तन की
बाट जोह रही है !
जो न कभी हुआ है
न कभी होगा
क्योंकि
इसकी शाश्वत
नियति ही
बन चुकी है
नित्य हारने वाला
एक जुआ।

ऋणमुक्ति

बचपन मे
मेरे गाव का
बालिया
अब
कास्टेबल
बसतीलाल है

नौकरी सभालने के
साथ ही
एक कसम सी
खा ली है
वह
अपने पर बकाया
गाव के कर्ज
मा-बाप की दुआ
बडे-बूढो की सीख
यार दोस्तो के प्रेम
तमाम
एहसानो-बोझो को
सर से
उतार फेंकेगा

और इस तरह
अपने दायित्व के
अनुरूप
गौरवमयी सेवा के
सर्वोच्च शिखर को
एक न एक दिन
अवश्य छू लेगा।

पीढी-दर-पीढी

सुनते आये हैं हम—
मूल से ब्याज प्यारा
आपने हमने
सबने स्वीकारा

बाप-दादाओं का ब्याज
होती है
वंश वृद्धि
सेठ साहूकारों का ब्याज
माल-मत्ते पर होती
चक्रवृद्धि

एक ब्याज
पैदा ही इसलिये
होता है कि
वह
दूसरा ब्याज
उतारे

उतारने को
चक्रवृद्धि एक
होम करदी
उन्होंने
पीढ़ियां अनेक

दीवाली

मुफलिस की दीवाली
गोया
उजडती हरियाली
या कि
जग मे हलाक
फौजी की घरवाली ।

भागीरथ-प्रयास

शहरो मे
अब कोई नही रहता
रहती हैं
केवल परछाइया
हममे भी
आदमियत इतनी सी
बसती है
जितनी
किसी वृद्ध चेहरे पर
बीते सुख की
कोई
धुधली-सी रेखा

शब्दो के रेगिस्तान मे
सद्भावना के आसमान से
सवेदना-स्नेह की गगा
उतार लाने का
प्रण किये
जो भागीरथ गया था
गुम कहीं
खो गया है

आदमी
अब स्वार्थ के
आसमान में उड़
गिद्ध पक्षी
हो गया है।

खिडकी

खिडकी
चकोरी के लिये
चाद का सन्देश
सेहतमद के लिये
ताजा-ताजा
हवा का झोका

खिडकी
चतुर-सुजानो के लिये
खुशगवार मौका
उत्साही लालो के
सत्काय मे बाधा डालते
सिपाही-सा
बेशम झरोखा

खिडकी होने का
कोई अर्थ नही
जब तक कि
खुली ना हो।

पेड

एक अदद पेड़
और एक ही/अदद सीना
पेड़ के
सीने पर
घाव मित्र करे
या शत्रु

घाव
गहरा था
बारहों मास हरा
लगातार खून
बहने पर भी
जघन्य पीड़ा
सहने पर भी

पेड़
मुस्तैदी से खड़ा है
तभी तो
सबसे बड़ा है
अगर यों
खड़ा न होता
हमसे बड़ा न होता
आदमी हो जाता
पेड़ न होता।

अधेरा-उजाला

अन्धेरा
अकेला परतु हाथ
रक्त-रजित होने भी
हर युग मे
भारी पडा है

सूरज
सबके साथ किंतु
पाक-दामन होने पर भी
हर युग मे
फासी चढा है

पूजा
हमेशा चमकती
चीज की होती है
भारी की नही।

युग-बोध

जम्बूद्वीप
भरत-खंड में
भरतों का
लोक कल्याण
नैतिकता
स्वग बोध से
पुराना नाता है

इनकी
सफलता-सिद्धि
मुक्ति का प्रत्येक मार्ग
कफल्टा की तराइयों
बेलछी की गहराइयों
पारसबीघा की ऊंचाइयों से
गुजरकर ही
जाता है।

आत्म-रक्षार्थं

बस्ती वालो की
दयानतदारी और हिम्मत की
आप भी देंगे दाद
पालनहारो के

खिलाफ
नही करेंगे फरियाद

आत्मरक्षार्थ
गोली-चालन की
घटना
घोषित नही हो जाती
जब तक
अपराध।

जिंदगी के लिए

जिंदगी का मौलिक चेहरा
इधर
शायद
खो सा गया है
और तो और
इसका स्वभाव भी
बदल कर
सौतेली मा का जसा
हो गया है

जिंदगी का चेहरा
असली हो
या नकली
मा सगी
या सौतेली
जिंदगी बुरी या
भली

दोनो को ही
छोडा नही जा सकता
जिंदगी या
सौतेली मा

राजा बेटा
साबित करने की
दोनो ही तो हैं
कसौटिया।
खुद को सभ्य नागरिक

कल

बगीचा
तहस-नहस
वीरान है

बागवान
हैरान है

तसल्लीबख्श है तो
कुछेक
अनखिली कलियाँ
जिन पर
उसका ध्यान है

बेहतर
मन की आग में
जीने वाला ही
इन्सान है।